छोटी सी उम्र में तत्वार्थ सूत्र का वाचन

संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की आज्ञानुवर्ती शिष्या आर्यिका 105 श्री आदर्शमति माताजी की संघस्थ आर्यिका श्री अनुग्रहमति माताजी के परम सानिध्य में पर्वराज पयूर्षण पर्व में सुगंध दशमी पर 1008 श्री चन्द्रप्रभ जिनालय उदय नगर में मा. निपुण जैन सुपुत्र श्री नागेन्द्रजी जैन के द्वारा तत्वार्थ सूत्र के 10 अध्यायों का वाचन बहुत ही सुंदर एवं स्वच्छ भाषा शैली में प्रस्तुत किया गया। जिसकी कभी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी कि 7 वर्ष की उम्र में इतने कम समय में पूज्य माताजी द्वारा बच्चे को इतने अच्छे तरीके से जैन दर्शन एवं संस्कारों का जो बीज डाला है वह इतनी जल्दी अंकुरित होकर साकार रूप में परिवर्तित हो जायेगा। क्षमावाणी के अवसर पर ब्र. अभय भैयाजी के मार्गदर्शन पर निपुण जैन ने तत्वार्थ सूत्र के एक अध्याय का वाचन किया। यदि किसी बच्चे में सीखने की इच्छाशक्ति, लगन हो और गुरु, माता-पिता का सही मार्गदर्शन निरंतर मिलता रहे तो समाज का प्रत्येक बच्चा छोटी से छोटी उम्र में बड़ी से बड़ी धार्मिक शिक्षा ग्रहण कर धर्म की वीणा बजा सकता है। ऐसे प्रतिभाशाली एवं समाज को गौरवान्वित करने वाले मा. निपुण जैन एवं उनके माता पिता श्री नागेन्द्र-पूर्णिमा जैन को समाज एवं गोलालारीय दर्शन की ओर से ढ़ेरो शुभकामनाएँ, बधाईयाँ।

स्व. श्री हेमचंद मोदी की स्मृति में डायग्नोस्टिक सेंटर पिनेकल का शुभारम्भ

समाज के प्रतिष्ठित डॉ. रुपेश मोदी ने अपने पिताजी की स्मृति में शहर के मध्य श्री हेमचंद मोदी मेमोरियल डायग्नोस्टिक सेंटर 'पिनेकल' का शुभारंभ 28 अगस्त को श्री वी.के. माथुर, मुख्य आयकर आयुक्त के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के कई प्रसिद्ध डाक्टरों के अतिरिक्त समाज के अनेक वरिष्ठजन उपस्थित थे। डॉ. रुपेश ने इस अवसर पर बताया कि समाजजनों को 30% रियायती दरों पर पेथोलॉजी व रेडियोलॉजी की सभी तरह की जांच की जावेगी। शीघ्र ही नगर के अन्य स्थानों पर भी सेम्पल कलेक्शन सेंटर प्रारंभ करने की योजना भी है ताकि अधिकाधिक समाजजनों को सुविधाओं का लाभ प्राप्त हो सके। डॉ. रुपेश मोदी गत कई वर्षों से समाजजनों को चिकित्सा परामर्श प्रदान कर रहे हैं व समाज के विकास कार्यों में आपका सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहा है।

अपने आप से पूछो ?

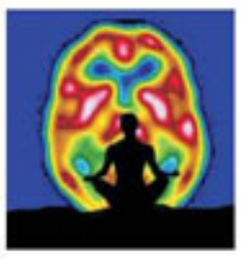

किरण जैन फणीश, इन्दौर। हम पवित्र कुल जैन धर्म में उत्पन्न हुए हैं। हमें जैन ग्रन्थों में अध्ययन चिंतन मनन का सुयोग्य अवसर मिला है साथ ही पूजा भक्ति आदि का सहज ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, दशलक्षण पर्व हम दस दिन जिनेन्द्र देव की पूजा भक्ति कर मनाते हैं। हमें दिगम्बर साधुओं के दर्शन, आहार, वैयावृत्ति तथा उनके द्वारा त्याग साधना का उपदेश भी मिल रहा है। ऐसे समय में क्या हमने कभी आत्म विकास के बारे में अथवा आत्म चिन्तन के विषय में आपने स्वयं से प्रश्न किये है।

1.क्या हमे विश्वास है कि हम स्वयं ही अपने भाग्य निर्माता है। अन्य कोई हमारे सुख दुख मे भागीदार नही हो सकता।

2.क्या यह दृढ़ श्रद्धा है कि पंच परमेष्ठी तथा स्वयं की आत्मा के सिवाय संसार में कोई शरण भूत नही है

3.क्या हमे यह विश्वास है कि हम पूर्व से बंधे पाप-पुण्य का फल भोग रहे हैं? वर्तमान में किये पाप पुण्य का फल आगामी काल में स्वयं भोगेगे तो क्या हम पापो से भयभीत है ?

4. क्या हमें यह मालूम है कि नरक तिर्यंच गति में दुख ही दुख है? मनुष्य और देवगति में भी सच्चा सुख ही सुखाभास है। तो क्या हम चर्तुगति भ्रमण मेटना चाहते है ? अविनाशी अक्षय पद प्राप्त करना चाहते हैं।

5. क्या हमने जानने की कोशिश की, कि संसार परिभ्रमण का मूल कारण मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, प्रसाद, मोह है तो क्या हम उन्हे छोड़ने या घटाने का सही पुरुषार्थ करते है ?

6. क्या हम सम्यकत्व और मिथ्यात्व की परिभाषा को समझते है संकट आने पर हम कुदेव आदि को तो नही पूजते ? क्या हमे यह विश्वास है कि अन्य देवी देवता हमारा भला बुरा नही कर सकते ? सच्चे देव ही शरण भूत है।

7. क्या हम धर्म के सच्चे स्वरुप को समझते है? व्यवहार और निश्चय को जानते हैं ? एकान्ती अथवा हठग्राही संसार के प्रपंचों अथवा मोह में फंसकर नररत्न को संसार समुद्र में तो नही फेंक रहे है?

8. हमारे आचार्य हमे पुकार पुकार कर कह रहे कि संसार के बाहरी पदार्थों में सुख नही, वरन आत्मा में ही अतीन्द्रिय सुख है। उसके लिये कभी अपनी आत्मा का ध्यान कर कर्मों का नाश करने का पुरुषार्थ किया ? तो फिर हम संसार के कार्यों में इतने रचे बसे क्यों हैं ? क्या हम अपनी आत्मा का उद्धार का मार्ग खोज रहे हैं ?

9. आगम में तत्वार्थ सूत्र आदि में बहुत आरम्भ परिग्रह को नरक दुर्गति का कारण कहा है। क्या हम इसे स्वीकार करते है? तो फिर हम परिग्रह को जोडने की होड़ में क्यों लगे है ? कहीं हम धनवान की महिमा तो नही गा रहे हैं ?

10. वर्तमान में जो हमें पूर्व पुण्य से धन बलबुद्धि आदि मिले है। क्या हम उसका कुछ सदुपयोग कर कल्याण के मार्ग में लगा रहे हैं ? तो समझ लीजिए कि हम जिनेन्द्र के भक्त हैं तो जिनेन्द्र भगवान के बताए हुए मार्ग पर चलकर एक दिन अवश्य हम सच्चे सुख की प्राप्त कर सकेगें

अतः दशलक्षण पर्व मे जो अपनी आत्मा का अनुभव करता वही श्रेष्ठ अन्तर आत्मा इन्द्रियों के विषय से विश्व होता है। वही सच्चा मुमुक्षु है उसके ही यह पर्व सार्थक होते हैं।

नोट - गोलालारीय दर्शन पत्रिका के लिए सागर, बीना, बबीना, उज्जैन क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय प्रतिनिधि (महिलाये इच्छुक हो तो सादर आमंत्रित है) जो सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों में रुचि रखते है वे सादर आमंत्रित है। वे 9406744064 पर संपर्क करे।

।। सादर श्रद्धांजली ।।

श्री अरविन्द कामताप्रसाद जैन का देहांत 3 जुलाई को इन्दौर में हो गया। आप बहुत मिलनसार व्यक्ति थे। समाज कार्यों में आप बढ़ चढ़कर भागीदारी निभाते थे।

स्व. श्री अमरचंदजी खंडवावालों के सुपुत्र **श्री अपूर्व जैन** का देहांत 22 अगस्त को हृदयघात के कारण अल्पायु में हो गया। आप काफी शांत स्वभाव के व्यक्ति थे। आपकी धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि थी। आपकी स्मृति में परिजनों ने 21000 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप प्रदान की है।

प्रेमचंदजी के बड़े पुत्र **श्री प्रतीक जैन** का आकस्मिक निधन 28 अगस्त को अल्पायु में हो गया है। आप धर्म व समाज कार्यों में रुचि रखते थे। आपकी स्मृति में परिजनों ने 71000 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप प्रदान की है।

स्व. श्री कपूरचंदजी के बड़े पुत्र **श्री दिलीप जैन** का देहांत 31 अगस्त को इन्दौर में हो गया है।

श्रीमती शांतीबाई स्व. सुमेरचंदजी जैन का देहांत 28 अगस्त को 90 वर्ष की दीर्घायु में जबलपुर में हो गया। आपका संपूर्ण जीवन धार्मिक कार्यों व स्वाध्याय में बीता। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी महिला थी।

श्री सुमेरचंदजी का देहांत 13 सितम्बर को इन्दौर में हो गया। आप सरल स्वभावी एवं धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। आपकी स्मृति में परिजनों ने 5100 रु. की राशि समाज को दान स्वरुप दी है।

श्रीमती रज्जीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री श्यामलालजी का देहांत 23 सितम्बर को इन्दौर में हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी एवं धार्मिक महिला थी।

गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट - शोक संदेशों का प्रकाशन जानकारी देने पर निशुल्क किया जाता है।

श्री छोटेलाल जैन के परिवार ने किये मरणोपरांत नेत्र दान

शांतिकुमार जैन, गंजबासौदा। 13 अगस्त 2016 को गंजबासौदा के श्री छोटेलालजी जैन (बाकलवालों) का 80 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया है। आप काफी शान्त स्वभाव के व्यक्तित्व थे उन्होंने काफी समय पहले ही संकल्प ले लिया था कि मृत्यु उपरांत नेत्रदान करना है। ऐसी दुख की घड़ी में उनके परिवार वालों ने उनके संकल्प का मान कर दोनों नेत्रदान करायें।

नगर में जैन समाज का 60% व्यक्ति मृत्युपरान्त नेत्रदान कर चुके है। गंज बासौदा में अभी तक लगभग 25 व्यक्तियों द्वारा नेत्रदान व दो व्यक्ति द्वारा देहदान किया जा चुका है। स्व. श्री छोटेलालजी की पगडी रस्म के समय चेतना समिति के अध्यक्ष श्री कन्छेदी लालजी, डॉ. रोहले सा., राजपूत सा. व शांतिकुमार जैन द्वारा स्व. श्री छोटेलालजी के परिवार का अभिनन्दन किया गया।